अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

उत्तराखंड का लोक साहित्य एवं सांस्कृतिक रूप

डॉ. ममता कन्याल

लोक साहित्य अंग्रेजी भाषा के 'फोक लिटरेचर' का हिंदी रूपांतरण है। जिसका अर्थ होता है, जन समुदाय से जुडा साहित्य। लोक साहित्य वह विस्तृत साहित्य है, जो संपूर्ण जन जीवन में फैला है, तथा प्राचीन सास्कृतिक मान्यताओं को अपने में समाहित किए हुए है। संसार के हर क्षेत्र में लोक साहित्य व्याप्त है, जिसकी अपनी एक अलग ही सांस्कृतिक विरासत होती है। लोक साहित्य के द्वारा हम समाज की आदिकालीन तथा तत्कालीन सांस्कृतिक परंपराओं की जानकारी प्राप्त करते हैं। संस्कृति को जीवित रखने उसमें सरलता उत्पन्न करने में लोक साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका है। उत्तराखंड के लोक साहित्य में स्थानीय बोलियों का प्रयोग किया गया है लोक साहित्य समाज के सामाजिक व धार्मिक भावनाओं सामाजिक सभ्यता और असभ्यता की, राजनीतिक स्थितियों और ऐतिहासिक घटनाओं का निर्णायक होता है।

लोक साहित्य लोक जीवन का दर्शन है। बनावटीपन से दूर लोक साहित्य लोगों के अंतःकरण की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। इस पर किसी एक व्यक्ति का विशेषाधिकार न होकर समाज के अधिकांश व्यक्तियों की रूचि ज्ञान व्यवहार तथा सोच का अनुपम संगम होता है। लोक साहित्य में परंपरागत ज्ञान प्रधान होता है इसमें लोग जीवन के हर्ष–उल्लास, सुख–दुख, चैन बेचैनी, संयोग–वियोग के भाव प्रदर्शित होते हैं।

''लोकसाहित्य फूलों के उस गुलदस्ते के समान है जिसमें भांति–भांति के फूल लगे हए हैं जिसकी सुगंध से समस्त लोक आनन्दित होता है परंतु यह कोई नहीं जानता है कि इन फ्लों को उगाने वाला मालिक कौन ? फूलों को गुलदस्ते में सजाने का कार्य लोकमानस के माध्यम से होता है''[1]

लोक साहित्य सहिष्णुता, कल्याण, समाजसेवा, त्याग की भावनाओं का पिरोकर लोक भाषा के माध्यम से सर्वत्र विराजमान है। यद्यपि कुछ लोग इसे ग्रामीण साहित्य भी मानते हैं, लेकिन खोखलेपन एवं ओछेपन से दूर इसमें वास्तविकता रहती है। लोक व्यवहार के दीर्घकालीन अनुभव शिष्टाचार एवं सामाजिक आवश्यकताएं इसके मूल में निहित है। ऐतिहासिक घटनाएं प्राचीन सभ्यता तथा प्राचीन सांस्कृतिक विशेषता का सही विवरण हमें लोक साहित्य में मिलता है। यदि हम किसी राष्ट्र की सभ्यता एवं संस्कृति का पता करना होता है तो सबसे पहले वहां के लोक साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक है।

''लोक साहित्य उस वटवृक्ष के समान है जिसको लोग मानव ने अपने हृदय की भावनाओं से सोंचा है, उसकी जड बहुत गहरे रूप में पृथ्वी पर जमी हैं, जो कि सैकडों हजारों वर्षों से लोग मानव को ज्ञान, उल्लास एवं मनोरंजन रूपो छाया प्रदान करता चला आ रहा है, जिसमें नित्य नई कोपले फूटती है और पुराने अर्थहीन पत्ते सूख कर गिरते रहते है।''[2]

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

लोक साहित्य वृहद रूप में लिखित न होने पर भी मौखिक रूप से पीढी दर पीढी आगे बढता रहता है लोक साहित्य क्षेत्रीय बोली घटनाओं, रुचिया, व्यवहारों, मान्यताओं पर आधारित होता है, लोक साहित्य समाज की भावनाओं एवं संस्कृति का प्रतिबिम्ब समाज के आगे प्रस्तुत करता है।

लोक साहित्य समाज का मार्गदर्शक एवं प्रेरणास्रोत है। जीवन के प्रत्येक छोर से लोक साहित्य की किरण निकलती है जो ज्ञान एवं मनोरंजन की ज्योति से संपूर्ण मानव समाज को प्रकाशवान करती है। लोक साहित्य सर्वत्र विराजमान है, तथा निश्च्छल एवं सादगो भाव के बीजों से अंकुरित होता है इसीलिए इसके अध्ययन से जगत सन्मार्ग एवं कर्मठता को ग्रहण करता है।

''लोक साहित्य लोक जीवन के धर्म, विश्वास, टोने, टोटके और धार्मिक मान्यताओं पर भी प्रकाश डालता है। लोक साहित्य में प्रचलित व्रत पूजा, उपासना, तंत्र–मंत्र, धामिक, विधि–विधान और नियमों की जानकारी हमें लोक साहित्य के अध्ययन से ही हो सकती है। विभिन्न देवी–देवताओं की उपासना पद्धतियों में लोक– धर्म के धार्मिक महत्व को देखा जा सकता है। पौराणिक एवं स्थानीय देवी–देवताओं के पूजा विधान के अध्ययन से लोक धर्म के स्वरूप को स्पष्ट किया जा सकता ह, लोक साहित्य लोक धर्म को लेकर चलता है धार्मिक विश्वासों के आधार पर आदिम मानव नृ–वैज्ञानिक अध्ययन के लिए भी लोक साहित्य प्रमाणिक सामाग्री प्रदान करता है।''[3]

उत्तराखंड की सांस्कृतिक विरासत में धर्म की प्रधानता है यहां के मूल निवासियों द्वारा शुभ कार्यों की शुरुआत धार्मिक मंत्रोच्चारण के साथ की जाती है, यहां की संस्कृति में शालीनता, कर्म की शुद्धता, त्याग तथा बलिदान, अपनत्व, निस्वार्थ एवं सर्वजन कल्याण की भावना पर आधारित हैं। इनमें वह संस्कार विद्यमान है जो एक स्वस्थ समाज एवं राष्ट्र का निर्माण करते हैं। इन संस्कारों में गंगा जल की तरह पवित्रता एवं शालीनता है। ये संस्कार जीवनोपयोगी एवं व्यवहारिक ह। यहां की लोक संस्कृति में समाज के रीति–रिवाज, परंपराए, सामाजिक संरचना, धर्म–कला, विज्ञान की प्रगति, आर्थिक व्यवस्था सामुहिक रूप में शामिल है। उत्तराखण्ड का लोक साहित्य सामाज का मार्गदर्शक एवं प्ररणा स्रोत है। जीवन के प्रत्येक छोर से लोक साहित्य की किरण निकलती है, जो ज्ञान एवं मनोरंजन की ज्योति से संपूर्ण मानव समाज को प्रकाशवान करती है। लोक साहित्य सर्वत्र विराजमान है तथा निश्च्छल एवं सादगी भाव के बीजों से अंकुरित होता है इसीलिए इसके अध्ययन से जगत सन्मार्ग एवं कर्मठता को ग्रहण करता है।

लोक साहित्य मौखिक अभिव्यक्ति के द्वारा अपनी सदियों की यात्रा गायन एवं कथा के द्वारा करता है यहां की संस्कृति में लोक गीतों की प्रधानता रही है खेतों में काम करती महिलाएं, हल चलाता किसान, बच्चों को सुलाती माताएं, जंगलों में जानवर चराते चरावाहे सभी लोक धुनों में मस्त होकर अपनी थकान मिटाते हैं। गायन को नृत्यमय बनाने के लिए विभिन्न वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है। यहां की लोक संस्कृति खेत खलिहान, पशु पक्षियों के स्वरां में रंगी हिमालय की ठंडी बयार की फुहारों से पोषित है। उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक विविधता गौरवमयी अतीत की गरिमा को उजागर करती हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

देवभूमि उत्तराखंड में ईश्वर के प्रति आस्था का भाव संपूर्ण जन जीवन में व्याप्त है। घरों से लेकर ऊंची ऊंची पर्वतों चोटियो में बने मंदिरों में लहराते झंडे घंटियों की टन टन..... धूप, अगरबत्ती की खुशबू नर– नारियों की विनती की विभिन्न भंगिमाएं समूची भूमि को ईश्वरमयी रूप प्रदान करती है।

''कुमाऊं में विविध उत्सवों, धार्मिक अनुष्ठानों, देवयात्राओं पूजाओं, मेलों, ठेलों–कौतिकों, विवाह, संस्कारों और मांगलिक अवसरों पर जहां भी कुछ लोग एकत्रित होने लगते हैं, गीत और नृत्यों का आयोजन स्वमेव ही होने लगता ह।''[4]

यहां का लोकमानव रसमय है, क्यों कि कठिन परीश्रम के बावजूद भी उसका विनोदी स्वभाव उसे नई उमंग स्फूर्ति के साथ तीव्र गति से आगे बढाता है। उत्तराखण्ड की लोक सांस्कृतिक विरासत पूर्वजों के त्याग एवं बलिदान की रस्मों से संचित एवं वीरों की वोरता से पल्लवित एवं पुष्पित है, कलाप्रेम यहां के मानव की जन्मजात प्रवृत्ति है। मकानों के दरवाजों, मूर्तियों, मुद्राओं, धारा–नौलो शिवालयां आदि स्थानों में सर्वत्र कला ही कला देखने मिलती है। लोक संस्कृति किसी भी समाज की वह ख्याती है, जिसमें वहां की जीवन शैली का प्रतिबिब सामने आता है।

''कुमाऊनी लोक साहित्य का दूसरा पक्ष अपेक्षाकृत शिष्ट एवं अभिजात्य पक्ष है, जिसके अंतर्गत चित्रकला एवं लोक चित्रण के विभिन्न रूप–अल्पना (ऐपण) आदि आते हैं। बंगाल में जिस तरह से ललित कलाओं का ज्ञान युवतियों के लिए आवश्यक माना है, उसी प्रकार कुमाऊं में ऐसा भी ऐपण की जानकारी कुमाऊनी युवतियों के लिए आवश्यक मानी जाती है। कुमाऊँ की अपनी पारंपरिक संस्कृति का विशिष्ट स्थान है। यहां की संस्कृति का स्वरूप लोक चित्रण द्वारा यहां के संस्कारों और कर्मकांड में प्रदर्शित होता है। अतः कुमाऊँ के संस्कारों में लोक साहित्य और लोक चित्रकला का अनुपम संगम दिखाई देता ह।''[5]

लोक साहित्य एक सरल साधारण लोक मानस की अनुभूति है, जिसमें वह सांस लेता है, अपने ज्ञान बिंदु से रसास्वादान करता है तथा निर्मल वाणी द्वारा आनंद की मुद्रा में गायन, श्रवण एवं तर्क–वितर्क करता है। क्षेत्र विशेष की परंपराएं रीति–रिवाज, मानसिक प्रवृतियों सांस्कृतिक विभिन्नताएं भौगोलिक रचना इसके आवरण हैं।

पवित्र तीर्थ स्थलों, मनोहर वनों एवं पर्यावरण की शुद्धता ने इस संस्कृति की आध्यात्मिकता एवं नूतनता को अमर बनाए हैं। चांचरी,छपेली, चौफुला नृत्य, छोलिया नृत्य, आदि मानव को पूर्ण आनंद देते हैं। लोक साहित्य जीवन में घटित समस्त घटनाओं का जीवन सार है जिससे हम उन समाज का ज्ञान प्राप्त करते हैं बिना साहित्य के समाज की आत्मा जीवित नहीं रहती। लोक साहित्य एक विज्ञान है, इसमें परीक्षण–निरीक्षण तथ्य एवं संभावनाएं व्यक्त की जातो है। मानव के क्रियाकलाप इसके अध्ययन के प्रमुख केंद्र ह। लोक साहित्य एक आनंद का विषय है, इसका विकास कमिक गति से चलता रहता

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

है। आज सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के कारण दूरदर्शन, रेडियों एवं इंटरनेट के माध्यम से भी लोक साहित्य लोकप्रिय बनता जा रहा है।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ0 गुप्त महेश (लोक साहित्य का शास्त्रीय अनुशीलन)पृ0सं0 23
2. डॉ0 गुप्त महेश (लोक साहित्य का शास्त्रीय अनुशीलन)पृ0सं0 23
3. डॉ0 पोखरिया देवसिंह (कुमाऊनी लोक साहित्य और कुमाऊँनी साहित्य) पृ0स0 10
4. डॉ0 पाखरिया देवसिंह (कुमाऊनी लोकगीत) पृ0स0.45
5. डॉ0 बिष्ट शेरसिंह (साहित्य और संस्कृतिः चिंतन के नए आयाम) पृ0स0 (135)